पानी गीला-गीला क्यों?

अमिताभ ओझा

हम जब किसी माचिस की तीली को माचिस की डिब्बी पर रगड़ते हैं तो क्या होता है? "आग पैदा होती है!" असल में यह घटना इतनी सामान्य है कि हम इसके बारे में कभी सोचते ही नहीं हैं। हमें यह सोचने लायक ही नहीं लगती है। लेकिन क्यों न आज हम इसी पर सोचें? और यह भी देखें कि लोगों ने इसके बारे में क्या-क्या सोचा है और कैसे-कैसे सवाल किए हैं?

सवाल है कि आग क्यों पैदा होती है? आग तीली की रगड़ से पैदा हुई है इसलिए आग का कारण भी तीली की रगड़ ही है। पर, हमारे दार्शनिक ऐसे आसान-से लगने वाले सवालों में भी न जाने कितने सवाल ढूँढ लेते हैं। उनका पहला सवाल होगा कि हम कैसे कह सकते हैं कि तीली की रगड़ ही आग पैदा होने का कारण है? पहली बार में यह सवाल थोड़ा अटपटा लग सकता है पर यह सवाल है तो बिल्कुल सही। अगर हम मानते हैं कि तीली की रगड़ ही आग पैदा होने का कारण है तो ज़रूरी है कि हम यह दिखा भी पाएँ।

इस सवाल को पूछने वालों का कहना है कि कई बार माचिस की तीली रगड़ने के बाद भी आग पैदा नहीं होती है। तुमने भी तो देखा होगा यह! ऐसे में हम कैसे विश्वास कर लें कि तीली की रगड़ ही आग पैदा होने का कारण है। हो सकता है आग किसी और कारण से पैदा हो रही हो!

क्यों?

विज्ञान का काम ही है किसी भी घटना को देखना और पूछना कि आखिर ऐसा कैसे हुआ। यानी किसी भी घटना के कारणों का पता लगाना। और दर्शन शास्त्र का काम है यह पता लगाना कि ये कारण स्वयं क्या हैं? हम कारण किसको कहते हैं? क्या कोई घटना बिना किसी कारण के हो सकती है?

हर घटना का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। कोई घटना बिना कारण के हो ही नहीं सकती है। क्या तुम कोई ऐसी घटना सोच सकते हैं जिसका कोई कारण न हो?

मिट्टी का घड़ा या घड़े की मिट्टी

कई साल पहले अरस्तु ने इस सवाल को बड़ी गम्भीरता से लिया था। उन्होंने किसी भी कार्य के कारणों को चार भागों में बाँटा था। उदाहरण एक मिट्टी के घड़े का लेते हैं। अरस्तु के अनुसार इस घड़े के होने के चार कारण हैं:

पहलाः मिट्टी जिससे घड़ा बना है।

दूसराः कुम्हार की मेहनत जिसने घड़े को बनाया।

तीसराः कुम्हार की सोच जिसने घड़ा बनने से पहले उसकी कल्पना की थी।

चौथाः घड़े का बनना।

उस समय भारत में इस सवाल को दूसरी तरह से पूछा जाता था। यहाँ सवाल यह होता था कि क्या कोई कार्य उसके कारण के अन्दर ही छुपा होता है? यानी क्या घड़ा पहले से ही मिट्टी के अन्दर था? कुछ लोग मानते हैं कि कारण और कार्य के बीच कोई सम्बन्ध नहीं होता है। उनका तर्क है कि यदि कार्य कारण में छिपा होता तो घड़ा दिखाई क्यों नहीं देता!

चलो, हम इसी सवाल को थोड़ा और टटोलते हैं। जब बादल गरजते हैं तो बारिश होती है। इस घटना में बादल का गरजना और बादल का घिरना कारण है और वर्षा का होना कार्य है। सवाल फिर वही है कि हर बार जब बादल घिरते हैं तो बारिश नहीं होती है पर ऐसा भी नहीं होता है कि पानी बरसे और वहाँ बादल नहीं हों। इसका मतलब यह हुआ कि बादल और बारिश में कोई रिश्ता तो है पर हम यह कैसे कह सकते हैं कि बारिश का कारण बादल ही है।

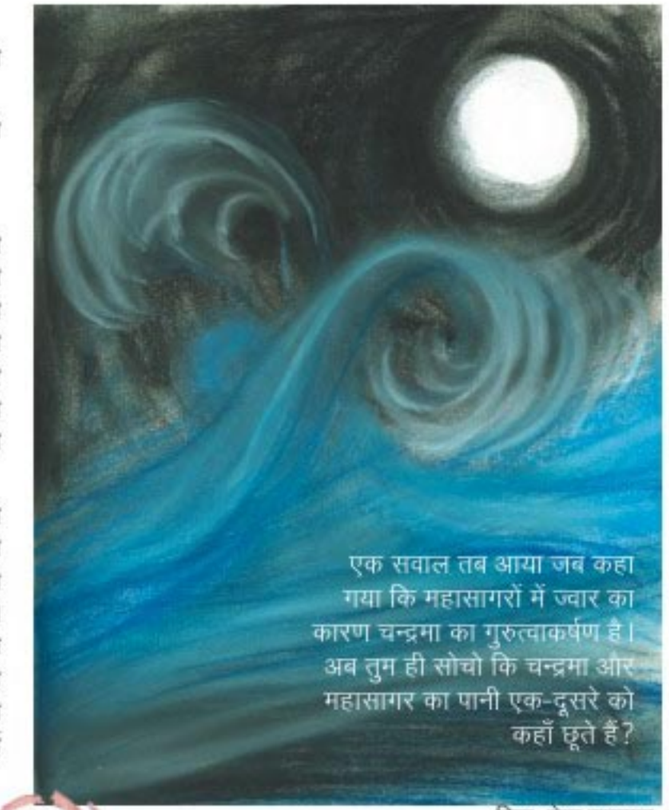

चित्रः नेहा बहुगुणा

दो रास्ते

जॉन नाम के एक दार्शनिक ने कहा कि किसी भी कारण को जानने के दो रास्ते हैं। यदि दो घटनाएँ हैं तो जो घटना पहले होगी वो कारण है यानी कारण कार्य के बाद में घटित नहीं हो सकता है। दूसरा यह कि कार्य और कारण किसी न किसी रूप से एक दूसरे से सम्बन्धित होते हैं।

लेकिन इस जवाब में एक समस्या है। मान लिया कि किसी कार्य का कारण उसके पहले ही घटित होगा। पर कितना पहले? यह समय एक सेकेंड भी हो सकता है और एक साल भी या कभी-कभी कई हज़ार साल भी। उदाहरण के लिए हिमालय के बनने का कारण है धरती पर होने वाली हलचल। दो बड़े भू-भाग एक दूसरे से टकराए और हिमालय का निर्माण हुआ। पर, इस प्रक्रिया में कई हज़ार साल लगे। और हमारी माचिस वाली घटना में हमने तीली को रगड़ा और कुछ ही सेकेंड में आग पैदा हो गई। दूसरी समस्या यह है कि कार्य के पहले न जाने कितनी ही घटनाएँ घटती हैं। मान लिया आग उत्पन्न होने से पहले हमारे प्रधानमंत्री कुर्सी पर बैठे हों, हो सकता है कि शाहरुख खान ने चश्मा लगाया हो, यह भी हो सकता है कि तेंदुलकर ने सेंचुरी मारी हो। बात यह है कि न जाने कितनी ही घटनाएँ आग उत्पन्न होने से पहले घटी होंगी। सवाल यह है कि हम दो घटनाओं को जोड़ते कैसे हैं? जॉन के पास भी इसका जवाब नहीं था।

चित्रः दिलीप चिंचालकर

कई लोगों का मानना था कि कारण और कार्य का सम्बन्ध उन्हीं दो घटनाओं में होता है जो एक-दूसरे से किसी न किसी तरह से भौतिक रूप से जुड़ी हों। जैसे, तीली और माचिस की डिब्बी। ये दोनों एक-दूसरे को छूती हैं।

तुम सोचोगे कि यह सुझाव तो बिल्कुल सही है। लेकिन समस्या तब आ खड़ी हुई जब न्यूटन ने कहा कि हमारी धरती के घूमने का कारण सूरज की गुरुत्वाकर्षण शक्ति है। यानी सूरज के गुरुत्वाकर्षण के कारण धरती उसके चारों ओर घूमती है। पर, यहाँ पर तो सूर्य और धरती एक-दूसरे को छूते नहीं हैं। धरती सूर्य से 15 करोड़ किलोमीटर दूर है। ऐसा ही एक सवाल तब आया जब कहा गया कि महासागरों में ज्वार का कारण चन्द्रमा का गुरुत्वाकर्षण बल है। चन्द्रमा और महासागर का पानी एक-दूसरे को कहाँ छूते हैं?

ह्यूम के कारण

ह्यूम नाम के एक दार्शनिक ने तो सबको चौंका ही दिया। उन्होंने कहा कि किन्हीं भी दो घटनाओं के बीच में कारण और कार्य का सम्बन्ध होता ही नहीं है। कोई भी दो घटनाएँ किसी भी तरह से आपस में नहीं जुड़ी होती हैं। घटनाएँ होती हैं और हमें लगता है कि उनके बीच कोई सम्बन्ध है। इसलिए हम उनमें से किसी एक घटना को दूसरी घटना का कारण मान लेते हैं। कुछ लोगों ने पूछा भी कि जब भी एक घटना घटती है तो दूसरी भी क्यों घटती है? यह इत्तेफाक एक बार, दो बार हो सकता है पर बार-बार कैसे होता है?

एक बड़ा सवाल

हो सकता है कि तुम्हारे भीतर यह सवाल कुलबुला रहा हो कि इन सब बातों का हम सब से क्या लेना-देना है? मैं कहूँगा कि है, बहुत महत्व है। अगर सारी घटनाओं का कोई न कोई कारण होता है तो इसका मतलब है कि हम जो भी करते हैं उनका भी कोई कारण होगा। यानी हम कुछ भी कर लें हम अपने आप को उसके लिए दोषी नहीं ठहरा सकते हैं। हम अपनी सारी गलतियों को किसी न किसी कारण के सर पर मढ़ सकते हैं। अगर ऐसा होने लगे तो सोचो क्या होगा? यह एक बड़ा सवाल है। क्योंकि ऐसा हुआ तो हम कोई भी काम कर के कह सकते हैं कि हम ने जानबूझकर ऐसा नहीं किया... फिर न कोई दोषी होगा... न किसी को सज़ा मिलेगी। तब जीने में क्या मज़ा रह जाएगा जब लगेगा कि सारे काम किसी न किसी कारण से पहले से ही निर्धारित हैं!

???

एक ट्रक एक मोटे रस्से से दूसरे ट्रक को खींच रहा था। इतने में एक आदमी वहाँ से गुज़रा। वो थोड़ी देर इस नज़ारे को देखता रहा। फिर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा। लोगों ने जब इसका कारण पूछा तो बोला, यार मुझे समझ नहीं आता कि इतनी छोटी-सी रस्सी को ले जाने के लिए दो-दो ट्रक बुलवाने की क्या ज़रूरत थी।

क्यों लगती है प्यास?

गिरिजा कुलश्रेष्ठ

गर्मी, यार बताओ।
क्यों लगती है,
तुमको इतनी प्यास?
पी जाती हो गटक्-गटागट
दिन भर कई गिलास

गागर रीती, मटके रीते
रीते, नदिया-ताल
भरे कहाँ तक इनको
धरती है बेहद बेहाल।

कभी चाहिए तुमको शरबत
कभी शिकंजी, लस्सी
आइसक्रीम तो? अरे, बाप रे!
पैंसठ? सत्तर?...अस्सी?
एक न छोड़ी बोतल फ्रिज में
कोल्डड्रिंक्स खल्लास।।

क्यों लगती है प्यास?
न पूछो मुझसे छुटकू लाल
कहते-कहते गर्मी जी का
चेहरा हो गया लाल।

सर्दी ने, गुड़, गजक, बाजरा
उड़द मखानी दाल।
तिल की टिक्की, गरम मँगोड़े
परसे भर-भर थाल।
मैथी के चटपटे परौंठे
और कचौरी खस्ता
भजिए, आलू बड़े, समोसे
सब कुछ कितना सस्ता

स्वाद-स्वाद में इतना खाया
पिया गया ना पानी
अब लगती है प्यास,
कहो, इसमें क्या है मनमानी।